नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आधारभूत ढांचा और मजबूत करने की जरूरत

भारत तेजी से दुनिया के सबसे भरोसेमंद मेडिकल टूरिज्म केंद्रों में अपनी पहचान बना रहा है. वर्ष 2009 में जहां केवल 1.12 लाख विदेशी मरीज इलाज के लिए भारत आए थे, वहीं 2025 में यह संख्या बढ़कर 5 .07 लाख तक पहुंच गई. मात्र 16 वर्षों में करीब साढ़े चार गुना की यह वृद्धि बताती है कि भारत अब केवल कम लागत वाले इलाज का विकल्प नहीं रहा, बल्कि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं और विशेषज्ञता का वैश्विक केंद्र बन चुका है. अनुमान है कि 2030 तक देश का मेडिकल टूरिज्म बाजार 1.56 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच जाएगा. यह न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र की सफलता है, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था, रोजगार और वैश्विक प्रतिष्ठा के लिए भी महत्वपूर्ण अवसर है.

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसका चिकित्सा कौशल है. यहां विश्वस्तरीय विशेषज्ञ डॉक्टर अपेक्षाकृत कम समय में उपलब्ध हो जाते हैं. जांच, निदान और उपचार की प्रक्रिया तेज है. अस्पतालों में आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी और इलाज की लागत पहले से स्पष्ट होने के कारण विदेशी मरीजों का भरोसा लगातार बढ़ रहा है. अमेरिका और यूरोप की तुलना में कई जटिल सर्जरी तथा उपचार भारत में बहुत कम लागत पर उपलब्ध हैं, जबकि गुणवत्ता अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप है. यही कारण है कि बांग्लादेश, इराक, ओमान, केन्या, सोमालिया और उज्बेकिस्तान जैसे देशों के अलावा विकसित देशों के मरीज भी भारत का रुख कर रहे हैं.

सरकार ने भी इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं. 172 देशों के नागरिकों के लिए ई-मेडिकल वीजा, मरीजों के साथ आने वाले परिजनों के लिए ई-मेडिकल अटेंडेंट वीजा और आयुर्वेद, योग तथा अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के लिए अलग ई-आयुष वीजा जैसी व्यवस्थाएं भारत को और आकर्षक बनाती हैं. 'हील इन इंडिया' जैसी पहल स्वास्थ्य सेवाओं को एकीकृत और अधिक सुलभ बनाने की दिशा में सकारात्मक प्रयास है.

हालांकि, इस सफलता के साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियां भी जुड़ी हैं. देश में निजी अस्पतालों का मजबूत नेटवर्क विदेशी मरीजों को आकर्षित कर रहा है, लेकिन यह सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है कि भारतीय नागरिकों की स्वास्थ्य सेवाओं पर इसका प्रतिकूल प्रभाव न पड़े. मेडिकल टूरिज्म के विस्तार के साथ स्वास्थ्य सेवाओं में असमानता, बढ़ती लागत और विशेषज्ञ डॉक्टरों की उपलब्धता जैसे मुद्दों पर सतत निगरानी आवश्यक होगी. यदि स्वास्थ्य सेवाएं केवल भुगतान करने में सक्षम लोगों तक सीमित होने लगें, तो इसका सामाजिक संतुलन प्रभावित हो सकता है.

भारत के लिए यह अवसर केवल आर्थिक लाभ कमाने का नहीं, बल्कि 'हीलिंग हब' के रूप में अपनी वैश्विक पहचान मजबूत करने का है. इसके लिए सरकारी और निजी क्षेत्र को मिलकर गुणवत्ता, पारदर्शिता, मरीजों की सुरक्षा, चिकित्सा नैतिकता और अनुसंधान पर समान रूप से ध्यान देना होगा. यदि स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार आम भारतीय नागरिकों के हितों के साथ संतुलित रखा गया, तो मेडिकल टूरिज्म भारत की अर्थव्यवस्था का नया विकास इंजन बन सकता है. दुनिया जब भरोसेमंद और किफायती इलाज की तलाश में है, तब भारत के पास चिकित्सा, करुणा और दक्षता,तीनों के बल पर वैश्विक नेतृत्व स्थापित करने का सुनहरा अवसर है.

धर्मेंद्र प्रधान के निर्णय से राष्ट्रहित का संदेश

राजेश कुमरावत 'सार्थक'

> भारत की शक्ति उसकी युवा पीढ़ी है. उस शक्ति को निराशा नहीं, विश्वास चाहिए ; टकराव नहीं, अवसर चाहिए ; और सबसे बढ़कर ऐसी शिक्षा व्यवस्था चाहिए जिस पर हर विद्यार्थी बिना किसी संशय के भरोसा कर सके. यही किसी भी लोकतंत्र की वास्तविक सफलता और राष्ट्रहित की सबसे बड़ी कसौटी है. लेखक -वरिष्ठ पत्रकार, समसामयिक विषयों के विश्लेषक एवं संपादक ङ्क जनमत जागरण

भारत में शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि करोड़ों युवाओं के सपनों, परिवारों की आशाओं और राष्ट्र के भविष्य की आधारशिला है. एक प्रतियोगी परीक्षा में बैठा विद्यार्थी केवल प्रश्नपत्र हल नहीं कर रहा होता, वह अपने जीवन की दिशा तय कर रहा होता है. ऐसे में यदि परीक्षा प्रणाली की निष्पक्षता पर प्रश्न उठते हैं, तो केवल एक परीक्षा नहीं, बल्कि व्यवस्था पर जनता का विश्वास भी प्रभावित होता है.

यही कारण है कि जब भी पेपर लीक, परीक्षा अनियमितता या चयन प्रक्रिया को लेकर विवाद सामने आता है, तो उसका प्रभाव केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और राष्ट्रीय स्तर पर महसूस किया जाता है.

इतिहास का एक रोचक संयोग है कि 1997 में परीक्षा व्यवस्था के मुद्दों पर सक्रिय छात्र आंदोलनों में भाग लेने वाले नेताओं में एक नाम धर्मेंद्र प्रधान का भी रहा. उस समय वे छात्र राजनीति के एक सक्रिय चेहरे थे. संघर्ष, आंदोलन और लोकतांत्रिक विरोध के बीच उनका सार्वजनिक जीवन आगे बढ़ा. लगभग तीन दशक बाद वही व्यक्ति देश के शिक्षा मंत्री के रूप में एक ऐसे दौर में खड़ा दिखाई देता है, जब परीक्षा प्रणाली को लेकर व्यापक बहस छिड़ी हुई है. लोकतंत्र की यही विशेषता है कि जो कभी व्यवस्था से प्रश्न पूछता है, समय आने पर उसी व्यवस्था की जवाबदेही भी उसे निभानी पड़ती है.

किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र में विरोध का अधिकार संविधान प्रदत्त है. विद्यार्थी अपनी बात रखें, सरकार से प्रश्न पूछें और सुधार की मांग करें—यह लोकतंत्र की स्वाभाविक प्रक्रिया है. किंतु उतना ही आवश्यक यह भी है कि जनभावनाओं का उपयोग ऐसे तत्व न करें जिनका उद्देश्य समस्या का समाधान नहीं, बल्कि अस्थिरता या राजनीतिक लाभ हो. जब किसी आंदोलन में विभिन्न वैचारिक, राजनीतिक या अन्य हित समूह सक्रिय हो जाते हैं, तब वास्तविक छात्र हित कहीं पीछे छूट जाने का खतरा भी पैदा हो सकता है.

भारत की युवा शक्ति विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति है. यदि यह शक्ति भ्रम, निराशा या भटकाव का शिकार होती है, तो उसका प्रभाव केवल वर्तमान पर नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य पर भी पड़ता है. इसलिए किसी भी सरकार, विपक्ष, सामाजिक संगठन और छात्र नेतृत्व की पहली जिम्मेदारी यह होनी चाहिए कि युवाओं का विश्वास बना रहे और उनकी ऊर्जा राष्ट्र निर्माण में लगे.

इसी संदर्भ में शिक्षा मंत्री के निर्णय को केवल राजनीतिक घटना के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा. यदि किसी मंत्री को यह लगता है कि उसके पद पर बने रहने से विवाद का समाधान कठिन हो रहा है, जबकि पद छोड़ने से व्यवस्था पर जनता का विश्वास पुनर्स्थापित करने में सहायता मिल सकती है, तो इसे लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व के एक दृष्टिकोण से भी देखा जा सकता है. लोकतंत्र में कभी-कभी व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण संस्था का विश्वास होता है.

यह भी विचारणीय है कि किसी भी परीक्षा विवाद का स्थायी समाधान केवल नेतृत्व परिवर्तन नहीं, बल्कि संस्थागत सुधार है. सुरक्षित परीक्षा प्रणाली, डिजिटल निगरानी, प्रश्नपत्रों की गोपनीयता, समयबद्ध जांच, दोषियों पर कठोर दंड और पारदर्शी चयन प्रक्रिया ही युवाओं का विश्वास लौटा सकती है. यदि इन सुधारों की दिशा में ठोस कदम उठते हैं, तभी किसी भी निर्णय का वास्तविक महत्व सिद्ध होगा.

आज आवश्यकता इस बात की है कि भारत का युवा स्वयं भी विवेकपूर्ण दृष्टि अपनाए. लोकतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग अवश्य करे, परंतु किसी भी प्रकार की अपुष्ट सूचना, भ्रामक प्रचार या ऐसे प्रयासों से सावधान रहे जो उसकी वास्तविक समस्याओं को पीछे छोड़कर उसे किसी अन्य उद्देश्य का माध्यम बना दें. राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी उसका जागरूक युवा है, और उसकी सबसे बड़ी शक्ति उसका विवेक.

1997 से 2026 तक की यह यात्रा केवल एक व्यक्ति की राजनीतिक यात्रा नहीं है. यह भारतीय लोकतंत्र के उस चक्र की कहानी है, जहाँ आंदोलन करने वाला व्यक्ति कभी व्यवस्था का हिस्सा बनता है और फिर उसी व्यवस्था के प्रति उत्तरदायी भी ठहराया जाता है. यही लोकतंत्र की कसौटी है—सत्ता केवल अधिकार नहीं देती, वह उत्तरदायित्व भी मांगती है.

अंततः इतिहास नेताओं को केवल उनके पदों से नहीं, बल्कि उनके निर्णयों से याद रखता है. यदि किसी भी निर्णय का अंतिम उद्देश्य युवाओं का विश्वास बनाए रखना, शिक्षा व्यवस्था को अधिक पारदर्शी बनाना और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखना है, तो उसका मूल्य तत्कालीन राजनीतिक बहस से कहीं अधिक व्यापक हो जाता है.

अब ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा का क्या होगा?

बॉन्ड सेवा रद्द करने का मेडिकल छात्र स्वागत करेंगे लेकिन गांव व दुर्गम क्षेत्र पर भी ध्यान देना होगा जहां बाल मृत्यु, कुपोषण मृत्यु की घटनाएं ज्यादा होती हैं.

मेडिकल छात्रों को एमबीबीएस पास करने के बाद 1 वर्ष तक ग्रामीण या दुर्गम क्षेत्रों में वैद्यकीय सेवा देना बंधनकारी था. ऐसा नहीं करने पर उन्हें भारी आर्थिक जुर्माना भरना पड़ता था और उनका रजिस्ट्रेशन अटक जाता था. अब राज्य सरकार ने वैद्यकीय छात्रों की बॉन्ड सेवा रद्द करने का निर्णय लिया है जो वैद्यकीय शिक्षा व ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण है. सरकारी मेडिकल कॉलेजों में कम फीस में वैद्यकीय शिक्षण दिया जाता है. यह पैसा करदाता की जेब से जाता है. इसलिए सामाजिक दायित्व के रूप में छात्र को एमबीबीएस के बाद 1 वर्ष तक अनिवार्य रूप से ग्रामीण या दुर्गम क्षेत्र में सेवा देनी पड़ती थी. यह शर्त रद्द किए जाने से अब एमबीबीएस पास करने के बाद छात्र को स्नातकोत्तर या अन्य पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के लिए समय उपलब्ध होगा. वह निजी क्षेत्र में काम कर सकेगा या संशोधन कर सकेगा. अब मेडिकल कॉलेजों में सीटों की संख्या लगभग तीन गुनी हो गई है. इसलिए सभी मेडिकल स्नातकों को सरकार के विविध विभागों में जगह देना कठिन होता जा रहा है. अब बॉन्ड सेवा रद्द हो जाने से सरकार को समुपदेशन व पोस्टिंग करने की जरूरत नहीं रह गई. दूसरी ओर यह भी तथ्य है कि राज्य के ग्रामीण व दुर्गम आदिवासी क्षेत्रों में डॉक्टरों की भारी कमी है. बॉन्ड सेवा रहने से वहां कम से कम प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा तो उपलब्ध होती थी. यह सेवा रद्द हो जाने से ग्रामीण क्षेत्र की गरीब जनता को दिक्कत होगी. नए मेडिकल ग्रेजुएट शहरी क्षेत्र में नौकरी खोजेंगे या निजी क्लीनिक खोलेंगे. ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर ताला नजर आएगा. ऐसी हालत में सरकार ठेका पद्धति से वहां डॉक्टरों की नियुक्ति कर सकती है. कोई न कोई विकल्प तो निकालना पड़ेगा अन्यथा गांव में अयोग्य किस्म के नीम-हकीम या बिना डिग्री के खुद को डॉक्टर कहने वाले लोगों को खुला मैदान मिल जाएगा. शहरों में विशेषज्ञ या स्पेशलिस्ट डॉक्टर जरूरी हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में जनरल प्रैक्टिशनर पर्याप्त होता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

मालवा- निमाड़ की डायरी

हादसे का अमिट दर्द क्या समझ पाएंगे जिम्मेदार?

संजय व्यास

ओंकारेश्वर में दर्शन को आए श्रद्धालु परिवार को स्थनीय सरकार की लापरवाही ने जो अमिट दर्द दिया है, वह जिम्मेदार समझ पाएंगे क्या? मासूम की मौत पर जांच बैठा दी गई, पर जो जान गई उसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती. विगत दिनों का वाकिया है, पवित्र नगरी में दर्शन करने पहुंचे नागपुर महाराष्ट्र के एक परिवार का कुल-दीपक गंदगी में डूबकर मर गया. अतिक्रमण बताकर प्रशासन ने लौवंशी धर्मशाला तोड़ दी. उसका सेप्टिक टैंक और गंदगी वैसा ही खुले पड़ा रहा. इसमें एक 3 साल का बच्चा गिर गया. समझिए उसकी मौत किस तरह हुई होगी? बदनसीब वह बच्चा या परिजन नहीं, दोष ओंकारेश्वर और खंडवा जिले के प्रशासनिक सिस्टम का है. कैसे सिंहस्थ में व्यवस्थाएं ये संभाल पाएंगे? इतनी दर्दनाक मौत भगवान ओंकारेश्वर मंदिर के पास चित्रगुप्त ने कैसे लिखी होगी? उनका भी हृदय कांप गया होगा. फिलहाल दोष नीचे बने धरती के सिस्टम को ही दिया जा सकता है.

लापरवाही में छोटे कर्मचारी भले नप जाएंगे, लेकिन मामला ऊंची नजर से देखने का है. अफसरों को भी इसमें नौकरी का चटका लगाना चाहिए. सिंहस्थ 2028 में जब लोग लाखों की संख्या में पहुंचेंगे, तो क्या ऐसी व्यवस्था भुगतेंगे? यह बिल्कुल अन्याय है. यदि व्यवस्था प्रशासन से नहीं चल पा रही है, तो क्या सनातन का ढिंढोरा पीटने वालों को मंदिर के पट बंद कर दिए जाने चाहिए? ताकि दर्शनार्थी यहां पहुंचे ही नहीं, आज बड़े स्तर पर कार्रवाई जरूरी है. वैसे मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया है कि इस दुर्घटना की जवाबदेही तय

की जाएगी और दोषियों के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी. फिलहाल स्थानीय प्रशासन धर्मशाला संचालकों पर दोष मढ़ने की कोशिश में लगा है.

अधिकारियों पर कार्रवाई के लिए अड़े दसेड़ा

जावरा नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष अनिल दसेड़ा ने ताराखेड़ी-नगरी सडक़ निर्माण कार्य में कथित अनियमितताओं को लेकर मोर्चा खोल दिया है. गत लोक सभा चुनाव में क्षेत्र के ग्रामीणों ने सडक़ निर्माण के आश्वासन पर ही मतदान किया था, वरना वे इसे लेकर मतदान बहिष्कार पर उतारू थे. एक किलोमीटर की सडक़ के निर्माण में 17 माह बीतने पर भी निर्माण अधूरा बताया जा रहा है. दसेड़ा के अनुसार ताराखेड़ी से नगरी तक लगभग एक किलोमीटर डामरीकरण सडक़ का कार्य फरवरी 2025 में करीब 1 करोड़ 25 लाख रुपये की लागत से स्वीकृत हुआ था. कार्यादेश जारी होने के 17 माह बाद भी सडक़ निर्माण अधूरा पड़ा है. उनका आरोप है कि विभागीय अधिकारियों द्वारा ठेकेदार को स्वीकृत राशि का लगभग पूरा भुगतान कर दिया गया, जबकि करीब 20 लाख रुपये लागत का डामरीकरण कार्य अभी भी बाकी है. इसे गंभीर प्रशासनिक अनियमितता बताते हुए निष्पक्ष जांच की मांग के साथ दसेड़ा निर्धारित कार्य से अधिक भुगतान करने वाले जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई पर अड़ गए हैं.

मनोज चौधरी की आपत्ति से पद अटका

देवास भारतीय जनता युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष नियुक्ति की कवायद के बीच गद्दारी विवाद ने जोर पकड़ लिया है. हाटपिपल्या विधायक मनोज चौधरी ने तथाकथित नाम पर एतराज जताया है. मनोज चौधरी के अनुसार 2023 के विधान सभा चुनाव में कुछ लोगों ने पार्टी के साथ गद्दारी कर उन्हें हराने का प्रयत्न किया था, ऐसे पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल लोगों को संगठन में जिम्मेदारी नहीं मिलनी चाहिए. मनोज चौधरी ने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष को भेजे शिकायती पत्र में विधानसभा चुनाव में पार्टी विरोधी गतिविधियों को लेकर अपनी ही पार्टी के कुछ नेताओं की भूमिका पर सवाल उठाए हैं. हालांकि विधायक ने सार्वजनिक रूप से किसी का नाम लेने से परहेज किया है, लेकिन भाजपा के अंदरखाने कुछ नामों की चर्चा तेज है. उधर, जिन नेताओं के नाम चर्चाओं में हैं, उन्होंने आरोपों को बेबुनियाद बताया है. खैर मनोज चौधरी की आपत्ति के बाद अभी तो भाजयुमो जिलाध्यक्ष पद पाने की लालसा लिए नेताओं का मामला अटक गया है.

निशानेबाज

हर कार्यकर्ता की खास चॉइस ऊंचा पद पाने की ख्वाहिश

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें कोई अच्छा सा पद हासिल करने की इच्छा है. इसके लिए कोई फॉर्मूला बताइए.' हमने कहा, 'पार्टी की सेवा कीजिए, नींव के पत्थर बन जाइए लेकिन पद की लालसा मत कीजिए. देश में नेता बहुत हैं. अच्छे, निस्वार्थी और आत्मार्पित कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम पहले ही कई वर्षों से कार्यकर्ता बने हुए हैं. आज तक हमें कोई बढ़िया पद नहीं मिला. सेवा हम करते हैं, मेवा दूसरे लोग खाते हैं.' हमने कहा, 'आपको कैसा पद चाहिए. शिक्षामंत्री बनेंगे तो 5 साल भी पूरे नहीं कर पाएंगे. कोई आंदोलन आपकी बलि ले लेगा. कोई भी पद स्थायी नहीं है.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हमें आप लाभ का पद दिलाइए जिसमें पांचों ऊंगलियां घी में रहें.' हमने कहा, 'पुलिस, एक्साइज, आरटीओ, इनकम टैक्स जैसे विभाग में नौकरी पा लीजिए नहीं तो चुंगी के दरोगा बन जाइए. मालामाल हो जाएंगे.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हमें नौकरी नहीं करनी है.

नेतागिरी की लाइन सबसे अच्छी है. ठेके में मोटा कमीशन लेकर नेशन की सेवा करेंगे. जो लोग हमारे सामने समस्या लेकर आएंगे, उन्हें आश्वासन की पुड़िया बांटेंगे. उनके पैसों पर दिल्ली मुंबई घूम आएंगे.'

हमने कहा, 'सभी जानते हैं कि आप निठल्ले लोगों को खादी का कुर्ता-पायजामा पहनाकर किसी बड़े नेता के पास अपना समर्थक बनाकर पेश करते हैं. काम दो कौड़ी का नहीं करते लेकिन अपने आडंबर की खबर पेपर में छपवा लेते हैं. पिछले दिनों आपने वृद्धाश्रम चलाने का ठेका लिया जिसकी ग्रैंट आने लगी. जब अधिकारी निरीक्षण करने आए तो दिखाने के लिए आपने झोपड़ा बस्ती के कुछ बूढ़ों को वहां लाकर बिठा दिया.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह छोटे-मोटे हथकंडे हैं. ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती. हमें कोई बड़ा पद चाहिए ताकि मजे से घोटाला कर सकें.' हमने कहा, 'यह सब भाग्य की बात है. समय से पहले और किस्मत से ज्यादा किसी को नहीं मिलता.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यह तो लोगों को बहलाने की बात है. लोग पद पाने के लिए कितनी ही तिकड़म करते हैं. जमाना ऐसा है कि घोड़ों को नहीं मिलती घास और गधे खा रहे च्यवनप्राश! अब हमसे रहा नहीं जाता. हमें किसी सत्ता के दलाल से मिलवा दीजिए. एक बार कोई मामूली पद भी मिल जाए तो हम उसे ऑफिस ऑफ प्रॉफिट बनाकर भरपूर कमाई कर लेंगे. नेता बनकर निश्चित रूप से करोड़पति बन जाएंगे.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12332 - डॉ. सागर खादीवाला

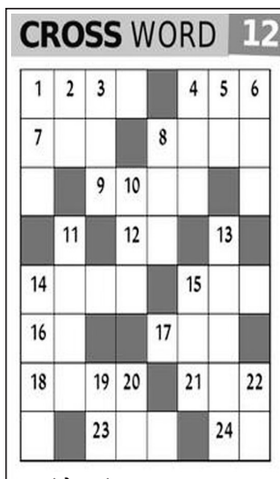

बाएं से दाएं

1. छिड़कना, भुरभुराना, बहकाना 4. उडती खबर, धीमा शब्द 7. जंगल में होने या मिलने वाला, जंगल में रहने वाला 8. यथाशक्ति, जहां तक हो सके 9. नया-नया आया हुआ 12. सत्य, सच, वास्तविक, किसी पदार्थ का सारभाग 14. खौलना, उमड़ना 15 वाहन, वह व्यक्ति जो सवार हो 16. औंधा, कपड़ा, पर्दा 17. स्त्री के मचवा रहने की अवस्था, विवाह के समय स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले गीत 18. प्राचीन भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा जिसमें पचास वर्ष का हो जाने पर वन में रहने का विधान है 21. एक वृक्ष या उसकी लंबी खट्टी गूदेदार फली 23. ध्यानपूर्वक देखना, ढूंढना, खोजना 24. अदद, संख्या

ऊपर से नीचे

1. सांप, आठ की संख्या (सं.) 2. नस, नाड़ी 3. गलीचा 4. श्रीरामचंद्रजी के छोटे भाई जो कैकयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे 5. स्नायु, नाड़ी 6. एक बेल का लंबोतरा फल 8. भक्त, सेवक 10. प्रत्याशा, कामना 11. शरीर पर लगाने का एक प्रकार का लेप 13. आवाजाही, आमदरफ्त 14. भोजन न करना, फाका 15 सहायक, मददगार, सहायता 19. आभा, दीप्ति, सूर्य की एक पत्नी 20. भूमि, जल से रहित भूमि 22. सभा, संघ (अं.)

Solution 12331

पू	र्व	ज	न्म		मु	र	ली
छ		ब		अ	हा		न
ता	म	ड़ा		ध	व	ल	
छ	म		अ	म	रा	व	ती
	ता	न	पू	रा		ली	
ठ		क	र्ण		रौ	न	क
फा	र	सी		गो	रा		ठि
न	ग	र		द	ना	द	न

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. यात्रा होगी, धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. वर्ष के मध्य में मित्रों एवं भाईयों का सहयोग रहेगा. अचल संपत्ति में सफलता मिलेगी. दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. कर्मचारियों का सहयोग रहेगा. वर्ष के अन्त में पारिवारिक समस्या से चिन्ता होगी. यात्रा आदि का योग है. शारीरिक कष्ट होगा. मित्र के प्रति उदासीनता रहेगी. अधिकारियों से मतभेद रह सकता है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मित्रों और भाईयों का सहयोग अचल संपत्ति से लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक समस्याओं से व्यस्तता रहेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को यात्रा मेंअधिक सतर्कता बांछनीय. शिक्षा में सफलता मिलेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को बैचारिक वाद विवाद होगा, धार्मिक कार्य में रूचि रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को कार्य में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को यश प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक शांत स्वाभिमानी अपने कार्यों के प्रति सजग रहने वाला सक्रिय होगा, इसको जब क्रोध आयेगा, तो शीघ्र शांत नहीं होगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. अन्याय को कभी सहन नहीं करेगा. शिक्षा साधारण होगी. स्वतंत्र व्यवसाय करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

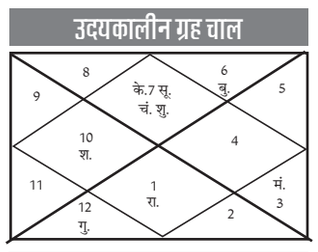

पंचांग

रा.मि. 06 संवत् 2083 आषाढ शुक्ल चर्तुदशी भौमवासरे शाम 5/51, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रे दिन 1/56, विष्कुम्भ योगे रात 1/8, वणिज करणे सू.उ. 5/22, सू.अ. 6/38, चन्द्रचार धनु रात 8/30 से मकर, शु.रा. 9,11,12,3,5,7 अ.रा. 10,1,2,4,6,8 शुभांक- 2,4,8.

व्यापार भविष्य

आषाढ शुक्ल चर्तुदशी को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, शक्कर, में तेजी का योग है. गेहूँ, जौ, चना, आदि अनाजों में नरमी रहेगी. वायदा विचार आज पिछले दिन के भाव ऊँचे रहेंगे. उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 3633 है.

मेष- धन संबंधी मामले में सावधानी पूर्वक निर्णय करें. रोगी की चिन्ता रहेगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा. सोचे हुये कार्य बनने का योग है.

वृषभ- सामूहिक कार्य में सबकी सलाह से वृषभे बढ़ना जरूरी है. मित्रों का साथ लाभकारी रहेगा. मानसिक सुख शांति रहेगी. लाभ मिलने का योग है.

मिथुन- धार्मिक आस्था बढ़ेगी. पिछले अनुभवों से सबक लेकर वृषभे बढ़ें. साहसिक कार्य बनेगा. किसी व्यक्ति से प्रसननता होगी. दायित्वों की पूर्ति होगी.

कर्क- जोखिम के कार्यों से दूर रहें. बातचीत में नरमी बरतें. किसी परीक्षा में सफलता मिलेगी. रोगी की चिन्ता रहेगी. खर्च विशेष होगा.

सिंह- सही वक्त पर फैसला लेने से नुकसान होगा.भौतिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. नया कार्य मिलने का योग है. सुख सौहार्द्र बना रहेगा.

कन्या- नौकरी में रहे व्यक्ति नये विकल्पों की तलाश में रहेंगे. मनोबल बना रहेगा. पारिवारिक सुख और सहयोग मिलेगा. दूर की यात्रा हो सकती है.

तुला- नये सौदे व्यापार में मजबूती प्रदान करेंगे. व्यापारिक लेनदेन में सफलता मिलेगी. कार्यो का समाधान होगा. पूज्य व्यक्ति से लाभ प्राप्त होगा.

वृश्चिक- आय के नये साधन जुड़ेंगे. कामकाज की व्यस्तता बढ़ेगी. समय का ध्यान रखें. कुछ नये आयोजनों का विस्तार होगा. साहस बना रहेगा.

धनु- पारिवारिक आयोजन प्रसन्नतादायक रहेगा. लक्ष्य की अधिकता रहेगी. अनावश्यक कार्यो कोटालें. खर्च की अधिकता रहेगी.

मकर- कार्यस्थल पर व्यवस्था बनाये रखने के लिये सख्ती रखना पडेगी, जिससे सहयोगी नाराज होंगे. आकस्मिक धन की प्राप्ति होगी.

कुम्भ- प्रतिभा के बल पर कार्यक्षेत्र में अलग पहचान बनाने में सफलता मिलेगी. पुराना कार्य निपटेगा. रोजगार संबंधी समाचार मिलेगा.

मीन- खर्च की अधिकता से कर्ज लेना पड़ सकता है. पारिवारिक यात्रा होगी. धार्मिक कार्यों की रूपरेखा बनेगी. रोजगार समाचार मिलेगा.

SUDOKU 7464

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7463

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7